International Organization of Research & Development (IORD)
ISSN: 2348-0831
Vol 12 Issue 02 | 2025

मेवाड़ और मारवाड़ की कलात्मक शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

चारू बारी (शोधार्थी), डॉ. सोनू सारण (शोध निदेशक), विभाग – इतिहास, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, चूड़ेला, झुंझुनूं

ईमेलः charubari92@gmail.com

सारांश (Abstract)

राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता में मेवाड़ और मारवाड़ की कलात्मक परंपराएँ विशिष्ट स्थान रखती हैं। इन दोनों क्षेत्रों की चित्रकला, स्थापत्य, संगीत, नृत्य और वस्त्र परंपराएँ, जहाँ एक ओर धार्मिक भावना और भक्ति से ओतप्रोत हैं, वहीं दूसरी ओर शौर्य, वीरता और राजसी वैभव को भी अभिव्यक्त करती हैं। यह शोध आलेख मेवाड़ और मारवाड़ की प्रमुख कलात्मक शैलियोंकृविशेषकर चित्रकला, स्थापत्य, संगीत एवं वस्त्रों–का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों क्षेत्रों की कला, क्षेत्रीय भिन्नताओं के बावजूद, भारतीय सांस्कृतिक एकता की मजबूत कड़ी है।

प्रमुख शब्द (Keywords)

मेवाड़, मारवाड़, चित्रकला, स्थापत्य कला, संगीत, लोक संस्कृति, तुलनात्मक अध्ययन, राजस्थानी कला, भक्ति परंपरा, वीरता

1. प्रस्तावना

राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध बनाने में मेवाड़ और मारवाड़ की कलात्मक परंपराओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मेवाड़ जहाँ भक्ति, धार्मिकता और रचनात्मक संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं मारवाड़ क्षेत्र वीरता, शौर्य, राजसी ठाठ और लोकसंस्कृति की विविधता से परिपूर्ण है। इन दोनों अंचलों की कलाओं ने क्षेत्रीय सीमाओं को लांघकर भारतीय कला जगत में विशिष्ट पहचान बनाई है।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(क) मेवाड़

- राजधानीः उदयपुर
- राजवंशः सिसोदिया
- प्रमुख शासकः महाराणा प्रताप, महाराणा कुम्भा
- धर्म और भक्ति पर आधारित कला संरचना

(ख) मारवाड़

- राजधानीः जोधपुर
- राजवंशः राठौड़

- प्रमुख शासकः राव मालदेव, अजीत सिंह
- वीरगाथा, शाही ठाठ, युद्ध संबंधी कलात्मक अभिव्यक्ति

3. चित्रकला में तुलनात्मक अध्ययन

पक्ष	मेवाड़	मारवाड़
विषयवस्तु	कृष्ण भक्ति, रामकथा, भागवत	शिकार दृश्य, युद्ध, दरबार
शैली	सूक्ष्म रेखांकन, गाढ़े रंग	गाढ़े रंग, मोटे ब्रश स्ट्रोक
पात्र	राधा–कृष्ण, संत	राजा, सैनिक, वीरांगनाएँ
संरचना	वर्गाकार सीमाएँ, केंद्र में विषय	खुला परिवेश, गतिशील चित्र
प्रेरणा	धार्मिक ग्रंथ, संत	ऐतिहासिक गाथाएँ, महापुरुष

4. स्थापत्य शैली में अंतर

(क) मेवाड़ की विशेषताएँ

- झीलों के किनारे महल (जैसे – लेक पैलेस)
- संगमरमर का प्रयोग, बारीक नक्काशी
- उदयपुर का सिटी पैलेस – स्थापत्य की भव्यता और संतुलन

(ख) मारवाड़ की विशेषताएँ

- पहाड़ियों पर सुदृढ़ किले (जैसे – मेहरानगढ़)
- गहरे पत्थरों से निर्मित, किलेबंदी पर बल
- महलों में आंतरिक भित्तिचित्र, छतरियाँ, तोरणद्वार

5. संगीत और नृत्य परंपरा का तुलनात्मक रूप

तत्व	मेवाड़	मारवाड़
लोकनृत्य	गवरी, भवाई	घूमर, चकरी
वाद्य यंत्र	सारंगी, पखावज	कमायचा, ढोल
गायन शैली	भक्ति गीत, मेवाड़ी गाथाएँ	वीर रस गीत, ढोला–मारू कथा
अवसर	धार्मिक पर्व, संत आराधना	युद्ध विजय, विवाह, उत्सव

6. वस्त्र परंपरा और आभूषण

(क) मेवाड़

- वस्त्रः हल्के रंग, सफेद धोती, साफा, अंगरखा
- आभूषणः धार्मिक प्रतीकों वाले, कम वजन के

(ख) मारवाड़

- वस्त्रः गहरे रंग, लाल–पीला पगड़ी
- आभूषणः भारी नथ, बाजूबंद, राजसी पहनावे

7. सामाजिक और धार्मिक प्रतीक

- **मेवाड़ में:** मंदिरों, संतों, भक्तों का चित्रण
- **मारवाड़ में:** युद्ध, राठौड़ वंश की गाथाएँ, स्त्रियों की वीरता (जैसे झलकारी बाई)

8. प्रमुख केंद्र और कलाकार परंपरा

मेवाड़:

- चित्रकार वंश – नाथू, मोकु
- कुम्भलगढ़, उदयपुर, नाथद्वारा

मारवाड़:

- कलाकार – बिस्सोंई वंश, जोधपुरी मिनिएचर कलाकार
- जोधपुर, नागौर, फलोदी

9. संरक्षण और समकालीन प्रवृत्तियाँ

- मेवाड़: नाथद्वारा चित्रकला संग्रहालय, इंटरनेशनल कृष्णा फाउंडेशन
- मारवाड़: मेहरानगढ़ संग्रहालय, मारवाड़ कलाकेंद्र
- डिजिटल आर्ट, शैक्षिक कार्यक्रम, लोक महोत्सवों में प्रदर्शन

10. निष्कर्ष

मेवाड़ और मारवाड़ की कलात्मक शैलियाँ अपनी भिन्नताओं के बावजूद, राजस्थानी संस्कृति की समृद्धता का समवेत स्वरूप प्रस्तुत करती हैं। एक ओर जहाँ मेवाड़ की कला भक्ति और अध्यात्म की गहराई में उतरती है, वहीं मारवाड़ की शैली में शौर्य, गति और वैभव की छवि उभरती है। इन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन हमें यह सिखाता है कि क्षेत्रीय विविधताओं में भी एकता संभव है, और यही भारतीय संस्कृति की मूल भावना है।

संदर्भ सूची (References)

1. शर्मा, के. (2020). मेवाड़ की चित्रकला परंपरा, राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन
2. जोशी, आर. (2018). मारवाड़ की सांस्कृतिक विरासत
3. भारतीय कला परिषद्, नई दिल्ली – राजस्थानी चित्रकला संग्रह
4- IGNCA (2022)- Rajput Miniature Paintings of Western India
5- Meena] D. (2021). The Architecture of Mewar and Marwar
6. Thakur, S. (2019). Rajasthan Lok Kalayein, राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रकाशन

7- UNESCO – Cultural Mapping of Rajasthan

8- Ministry of Culture – Annual Reports on Folk and Classical Art

9- Dwivedi, A. (2023). “Mewar & Marwar Artistic Dialogue” Indian Cultural Review

10- Nathdwara Archives, Mehrangarh Museum Trust